इंडिया टीवी .in
www.indiatv.in

नवरात्रि हवन विधि मंत्र सहित

सबसे पहले मां दुर्गा की पूजा करें। पूजा के बाद पूजा स्थल पर ही हवन कुंड स्थापित करें। पृथ्वी माता का ध्यान करें और अपना भार उठाने हेतु आभार व्यक्त करें।फिर अपनी हथेली को स्वच्छ करें और उसमें तीन बार जल हथेली में लेकर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुये आचमन करना है...

ॐ केशवाय नमः

ॐ नारायणाय नमः

ॐ माधवाय नमः

इसके बाद घी का दीपक प्रज्वलित करें एवं अग्निदेव का आवाहन करें। फिर अब अपने दायें हाथ में जल लेकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करना है..

मंत्र है- भूलोके धर्म स्थापनार्थम् सर्वेषाम् जनानाम् सुख शान्ति सिद्ध्यर्थम् दुर्गा होमकर्म यथाशक्ति करिष्ये

इस मंत्र को बोलते हुये जल को अपने सामने भूमि पर छोड़ दें। फिर हवन कुण्ड में कुछ सूखे नारियल के टुकड़े, लकड़ी और उपले डालें। फिर कपूर की सहायता से निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुये अग्नि प्रज्वलित करें।

ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्।

अब नीचे दिए गए मन्त्र का उच्चारण करते हुये अग्नि में आठ बार घी डालें।

ॐ भूर्भुवस्सुवः स्वाहा।

हवन में प्रारम्भिक आहुतियां इन मंत्रों के साथ दें...

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदम् प्रजापतये न मम।

ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदम् इन्द्रयै न मम।

ॐ अग्नये स्वाहा, इदं अग्नये न मम।

ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम।

ॐ भूर्भुवस्सुवः स्वाहा।

ॐ गं गणपतये नमः स्वाहा।

ॐ वं वरुणाय नमः स्वाहा।

निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुये कल्पना करें कि भगवान गणेश हवन की दिव्य अग्नि में प्रवेश करके आपकी आहुतियां स्वीकार कर रहे हैं।

अत्र आगच्छ। आवाहिता भव।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुये अग्नि में पिसा हुआ चन्दन अर्पित करें।

ॐ लं पृथिव्यात्मिकायै नमः

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये हवन में फूल अर्पित करें।

ॐ हं आकाशात्मिकायै नमः

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये एक धूपबत्ती जलाकर हवनकुण्ड के पास रखें।

ॐ यं वाय्वात्मिकायै नमः

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये हवन कुण्ड को दीपक दिखायें।

ॐ रं अग्न्यात्मिकायै नमः

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये फल का टुकड़ा, किशमिश और बनाया गया थोड़ा सा भोजन हवन में अर्पित करें।

ॐ वं जलात्मिकायै नमः

मुख्य देवी-देवता को आहुतियां

इन तीन मन्त्रों में से किसी भी एक का उच्चारण करते हुये यज्ञ की अग्नि में घी अर्पित करें।

ॐ दुं दुर्गायै नमः स्वाहा।

ॐ श्रीं ह्रीं दुं दुर्गायै नमः स्वाहा।

ॐ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै। ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रा सततं नमः॥ स्वाहा।

आप इस प्रक्रिया को अपनी इच्छानुसार जितनी बार चाहें कर सकते हैं। यदि आप दुर्गा सप्तशती का पाठ करते हैं तो आप समस्त 700 श्लोकों का हवन किसी आचार्य की देखरेख में कर सकते हैं। या फिर आप पंचम अध्याय के श्लोक संख्या 9 से श्लोक संख्या 80 के बीच देवताओं द्वारा देवी की स्तुति का भी हवन कर सकते हैं।

हवन में अन्तिम आहुतियां

ॐ भूः अग्नये स्वाहा।

ॐ भुवः वायवे स्वाहा।

ॐ स्वः सूर्याय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

ॐ विष्णवे स्वाहा।

ॐ रुद्राय स्वाहा।

अब 6 किशमिश, 6 फल या 6 फल के टुकड़े लें और इस मन्त्र का उच्चारण करें...

ॐ पार्ष्देभ्यो नमः।

पूर्णाहुति

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये एक गोला का टुकड़ा, बड़ी लकड़ी और थोड़ा घी हवन में अर्पित करें और साथ ही यह कल्पना करें कि आप अपना सम्पूर्ण अस्तित्व मां दुर्गा को समर्पित कर रहे हैं।

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये हवन में घी अर्पित करें।

ॐ अग्नवे सप्तवते स्वाहा।

इस मन्त्र या माता के किसी अन्य मन्त्र द्वारा यथाशक्ति ध्यान करें।

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।

सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्ययैश्चतुर्भिर्भूयै।

शङ्खं चक्रधनुःशरांश्चर दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।

आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा।

दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला॥

ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ श्रीदुर्गायै नमः।

अन्त में इस मन्त्र का उच्चारण करें।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः